Post Graduate Programme

M.A. (Maithili)

Semester - II

Paper: CC-7 Paper Code: MTL 523 Topic अलंकार (Unit-IV)

'अतिशयोक्ति' अलंकारक सोदाहरण परिभाषा

अतिशयोक्ति : उपमेयकेँ नुकाय उपमानक संग ओकर अभेद प्रतीति जतए देखबाओल जाइछ, ततए अतिशयोक्ति अलंकार होइछ, यथा-

"कनक कदलि पर सिंह समारल
तापर मेरु समान।"
- विद्यापति

एतए उपमेय जाँघ, कटि एवं छातीक स्थानपर क्रमशः उपमान 'कनक कदलि' (सोनाक बनल केराक थम्ह), 'सिंह' (सिंह-सन पातर डाँड़) ओ 'मेरु'क (सुमेरु पर्वत-सदृश छाती) क कथन कएल गेल अछि आ ओकरा संग जाँघ, डाँड़ ओ छातीक अभेद-स्थापन कएल गेल अछि, अतः एतए अतिशयोक्ति अलंकार अछि।

अथवा

"स्नेह कालिमा विविध धूपमाला-परिमलवर,
अतुल दीर्घता अचल पाब कथमपि यदि चामर।
तँ एकावलि-अलक पालि-तुलनाक कथञ्चित,
हो कदाच किछु मात्र ततए अवसर सम्भावित।"

प्रस्तुत पद्यांशमे एकावलीक केशक वर्णन प्रसंग

कहल गेल अछि जे जँ चामर (विशेष प्रकारक गायक नाङरि) कें तेल, विविध चूर्णक सुगन्धि, अतुलनीय दीर्घता आ अन्यान्य गुणसँ जँ युक्त कए देल जाए तखने ओकरा एकावलीक केशपाशसँ किञ्चित् तुलना करल जा सकैत अछि।

अतिशयोक्तिक अर्थ अतिशय उक्ति अछि अर्थात् कोनो बातक अतिशय (बढ़ा-चढ़ा कए) वर्णन करबामे अतिशयोक्ति होइत अछि।

एकर छओ गोट अवान्तर भेद करल गेल अछि-

(क) रूपकातिशयोक्ति,

(ख) भेदकातिशयोक्ति,

(ग) असम्बन्धातिशयोक्ति,

(घ) सम्बन्धातिशयोक्ति,

(ङ) अक्रमातिशयोक्ति

एवं

(च) अत्यन्तातिशयोक्ति।

(क) रूपकातिशयोक्ति

जतए उपमेयकेँ नुकाकए ओकर कथन मात्र उपमानक द्वारा करल जाइछ।

(ख) भेदकातिशयोक्ति
जतए अभेद रहितहु भेद देखबैत अतिशयोक्ति कएल जाए।

(ग) असम्बन्धातिशयोक्ति
जतए सम्बन्ध रहितहुँ ओकर अभाव कहल जाए।

(घ) सम्बन्धातिशयोक्ति
जतए सम्बन्ध नहि रहलोपर सम्बन्ध कथन कएल जाए।

(ङ) अक्रमातिशयोक्ति
जतए कारण ओ कार्य एक संग वर्णित होअए।

(च) अत्यन्तातिशयोक्ति
जतए कारणसँ पहिने कार्यक होएब वर्णित होअए।

1. "उपमेयं निगीर्य उपमानेन तस्याभेद कथनम् अतिशयोक्तिः।"
2. पद्य संख्या - 53, अष्टम सर्ग, एकावली परिणय, बदरीनाथ झा

प्रोफ़ेसर (डॉ.) वीरेन्द्र झा
मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना।